ऐतिहासिक पत्रस्तम्भ

नं. ३८५

अर्जि – – – – – – – – – – – –

उप्रान्त वैद लक्ष्मिवल्लभ पन्तले अल्मोडा मानिस पठाइ झिकायाको षवर पश्चिम रुम स्यामका वादसाहसंग लडाई गर्नं जान्छु रस्ता देऊ भनि रणजितसिहसित अंग्रेजले सवाल गर्दा सिहले रस्ता हामि दिदैनौ चोरिछलिकन जान्छौ भन्या जाऊ भनि सिहले जवाफ दिदा फिरंगिको र रणजितसिहको लडाई ठह्र्यो जति पल्टन छन् त्यो र जवन सव कर्नाल लुध्यानामा ज्मा भयाका तोप अट्ठार सय येति कर्नाल लुध्यानामा ज्मा भयाको हो भन्या निस्तुक षवर छ अल्मोढाबाट येक हजार नैयां सिपाहि कुमैयांमा भर्ति गरि लुध्यानामा पठायेछ रुम स्यामका वादसाहसंग पर्दा रणजितसिहसित लडाई ठह्र्यो रणजितसिहको ३६ हजार प्यादा ५० हजार सवार फुलवटमा ज्मा भया गरे रुम स्यामका वादसाहका चिठि रणजितसिहलाई तिमि कौन वादसाहभित्र छौ भनि लेख्दा सिहले हामि डिल्लिका वादसाहभित्र छौं भनि लेषि पठायाछन् भन्या षवर छ वांकी अंग्रेज हामरो मोहिमि सिहसित पर्‍यो गोर्षालीले कदाचित् दगा गर्ला भनि डरायाको छ अंगरेजका तरफको गोर्षाबहादुरसंग केहि दगा होला भनि हाल देषिदैन निश्चय मालुम हुन्छ भन्या षवर आयेछ र सोहिबमोजिम हजुरमा चह्राई पठायाको हो नजर्भै जाहेर होला – – – – – – – –

सेवक उजिर्सेनको कोटि कोटि कुर्नेस

ईति सम्वत १८९५ साल मिति कार्तिक सुदि १३ रोज ४ मुकाम डोटि सिलगढि सुभम् – – – – –

–०–

नं. १५९

श्री ५ सर्कार श्री ६ राजगुरुजू

१ २

अर्जि – – – – – – – – – – –

उप्रान्त गरीबपर्वर मेरे श्रावण वदि १ रोजसे लेकर्के आज दिनतलक जितनि अर्जियां वन्देने –१–– के चरणोमे भेजी है उनका हाल मुझे नही मालूम हैके कौनसी अर्जी ––१–– के चरणोमे गुजरी है कौनसी अर्जी विचमे रही है इसी वास्ते तमाम अर्जीयोकी नकल –१– के चरणोमे हाजर कर्ताहू मेरा हाल मुफस्सिल और हक्क तावेदारीका और हक्क नमकहलालीका हजूरके मुलाहेजेमे गुजरे– – –

१ उप्रान्त गरीबपर्वर मेरे बन्देकी अर्ज ये है आषाढ सुदि ५ रोजमे कप्तान अर्जुनसिंह थापाजीका मानिस कप्तान मस्कूरका षत और जमादार पन्नूसिंहका षत लेकर्के दिल्लीमे आयाथा उस्की जुवानी मालूम हुवाके दीनानगरमे जमादार मस्कूरने चिठि डाकमे भेजनेका चाहाथा चिठी डाकवालेने नही लिया इसी वास्ते मेरे हस्ते चिठी भेजा है सो कर्नालके जिलेमे साहेवान अंगरेजके आदमी चिठी षतोकी तालाशी लेते है वाद इस्के आज दिन येह वात सुन्नेमे आया है के दिल्ली रजिडन्टने किसू अपनी अहेल्कारसे पूछा है के वालाशंकर कौन है जो नेपालको –१– मे षवर अषवार भेजता है परंतु येह वात अभी प्रसिद्ध नहीं हुवा है इस्से मालूम होता है एक रोज मुझसे भी पूछा जायगा सो गरीबपर्वर मेरे ब्राह्मणका काम येही है अपने षाविन्दसे अर्ज कर्ना वाद मुलाहेजा कर्ने अर्जीके वन्द हुकुमका उम्मैदवार है कदाचित् येहवार होवै तो वन्दा इस्की जुवावदेही किस तौरसे करे –१– की हुकु-

मको जाहेर करे या नहीं वन्दा –१– के कल्याणको चाहता है औ अपनी नेकनामीको चाहता है इस्मे जो हुकुम –१– से होवे सोमाफिक वन्दा वजालावे वन्दा –१– से हुकुमका उम्मैदवार है ज्यादा क्या विन्ती करुं –१– सर्वज्ञ है मै उम्मैदवार हूं इस मुकद्दमेमे जो हुकुम –१– होवे सो जल्द मुझे इनायत होवे जान अजान कसूर माफ होवे सं १८९५ श्रावण वदी १ रोज १ शुभम् —

२ उप्रान्त पहले अर्जी वन्देकी हजूरके मुलाहेजेमे गुजरी होगी वाद इस्के श्रावण वदी २ रोजमे बेल साहव बहादुर जज्जने तालाश किया बालाशंकर कौन है जो नेपालकी –१– मे अषवार भेजता है उसे दर्याफ्त करो इस वातमे साहवने कोतवालको हुकुम दिया कोतवालने थानेदारोको हुकुम दिया मगर छिपाकर्के वाद इस्के कोतवाल थानेके मकानमे आयकर्के वैठा जिस थानेमे वन्दा रहेता है कोतवालने थानेका सिपाही मेरे घर भेजा उस समे बन्दा तो घरमे नही था मेरे वडे भाई सदाशंकरजी घरमे मौजूद थे उनको सिपाही कोतवालके पास लेगया कोतवालने मेरे भाइसे कहा तुम कुछ नेपालसे वास्ता रषते हो और नेपालके आदमी आय कर्के तुमारे घरमे उतरते है सो गरीबपर्वर मेरे मालूम तो हमे था के हमारी तालाश होरही है इसमे मेरे भाइने कहा के हम नेपालसे वास्ता भी रषते है कोतबालने कहा तुमको बेल साहवके पास चलना होगा इस्मे विहान समे मेरे भाईको कोतवाल अपने साथ साहवके पास लेगए उस समे साहवने सब आदमीको बिदा कर्के एकान्तमे साहबने पूछा तुम्हारा क्या नाम है तुम लोग के भाई हो क्या काम कर्ते हो भाई मेरेने वयान कियाके हम लोग ब्राह्मण है मेरा नाम सदाशंकर है भाईका नाम बालाशंकर है दुसरे भाईका नाम जयशंकर है बन्दा तो नौकरी पेशे है मेरा भाई पंडिताईका काम कर्ता है छोटा भाई अंगरेजी नवीस है साहवने पूछा तुम नेपालमै क्या वास्ता रषते हो वयान किया के नेपालसे हमे वास्ता ये है के जो कुछ फरफर्माइशका हुकुम –१– से आता है सो हम सर्रजाम कर्के भेजते है साहवने पूछा तुम अषवार भी लिषता है अर्ज किया अषवार तो हम नहीं लिषते है मगर जो नयां वात इस शहरमे होता है सो अलवत्त हम लिष भेजते है साहवने पूछा जो नेपालसे आदमी आता है सो कहां ठहेरता है वयान किया जो आदमी नेपालसे आवते है सो हमारे पास आवते है पूछा तुम जो –१– का काम देता है तुम्हारे पास कोई –१– का हुकुम पर्वाना है अर्ज किया ऐसा छोटे छोटे कामके वास्ते –१– का मोहर कब होताहै इस मुल्कमे मुष्त्यारोंकी मोहोरसे सब काम जारी है साहवने पूछा कोई मुष्त्यारका मोहर तुम्हारे पास है भाईने कहाके पहेले जनरल कम्याण्डर यि चिफ भीमसैन थापाजीका पर्वाना हमारे नाम आवते थे अब राजगुरु श्री रंगनाथ पण्डितजीके पर्वानेबमूजिव काम कर्तेहे साहबने पूछा किस तौरसे तुमको नौकरी –१– मे हुवा था तुम तो रहेनेवाला दिल्लीका है और तुम कबसे नौकर है अर्ज किया अर्सा बहोत दिनका हुवा पहेले २ सर्दार नेपालसे आए थे पूछा उनका क्या नाम था अर्ज किया सुबेदार करबीरसिंहजी और दारोगा हेमदल थापाजी दिल्लीमे आए थे पूछा कौन कामके वास्ते आए थे अर्ज किया घोडे षरीद कर्नेके वास्ते आए पूछा उनके वाद कौन कौन आदमी आए और किस किस कामके वास्ते आए सब बयान करो अर्ज किया दुसरेके फेर लेफटैन करबीरसिंहजी आए पश्मीना षरीद कर्नेके वास्ते बाद इस्के लेफटैन हेमदल थापाजी आए कहा वोह किस कामके वास्ते आए अर्ज किया हाथी बेचनेको आए थे और कुछ माल षरीद कर्नेको आए थे पूछा इनके वाद कौन आया अर्ज किया फेर कप्तान करबीरसिंहजी आए हार्सन साहब बहादुरका पर्वाना लाए और ३० चिठियां साहब लोगोंके नाम लाएथे —१— के तरफसे तौफ लेकर्के महाराज रंजीतसिंहजीके पास लाहोरमे गए उधरसे तौफ लेकर्के बैट साहव बहादुरके हुकुम पर्वानेबमूजिव लाहौरसे आए नेपालको रवाना हुवे साहबने पूछा काजी कालूसिंहजी उनके साथ किस कामके वास्ते आए थे अर्ज किया —१— के हुकुमबमूजिव ज्वालाजीके मन्दिरमे घण्टा चढावनेके वास्ते आए थे पूछा वोह तो लाहौरमे गए थे अर्ज किया वहांसे लाहौर नजदीक था काजी साहवने कहा फेर कब आवना होगा इस वास्ते लाहौरकी सैर कर्नेको चले गए थे फेर पूछा इनके वाद कौन आया अर्ज किया फेर कप्तान इन्द्रवीर षतृ आए पूछा येह किस वास्ते आए भाईने अर्ज किया राजकाजका वात है इसे मै क्या जानू येह वात हार्सन साहब बहादुरसे पूछिए जिनका दसषती पर्वाना लेकर्के आएथे अथवा सामस

साहब बहादुरसे पूछिए जिनके नाम हार्सन साहब बहादुरकी चिठ्यिां लाए थे साहबने पूछा मातवरसिंह थापा जो आए हैं येह कौन कामके वास्ते आए हैं अर्ज किया मुझे मालूम नहीं है येह किस वास्ते आए हैं वोह दिल्लीमे भी नही आए और बन्देने उसकी सूरत भी नहीं देषी और उनके मुकद्दमेमे —२— ने हमे कुछ नही लिषा मैं नही जानता वोह आए हैं या नही आए अथवा किस कामके वास्ते आए हैं साहबने फर्माया हम तुमसे पूछता है सच्च बताओ कोही आदमी पंडित नेपालसे आया है तुम्हारे घरमे बैठा है येह सच्च बयान करो वोह आदमी किसूको अषवार भेजता है अर्ज किया एक ब्राह्मण कुरु क्षेत्रकी जानेवाला है वोह इस लायक भी नही है और किसूको अषवार भी नही भेजता है पूछा वोह किस कामके वास्ते बैठा है अर्ज किया गरमीके सववसे उनके आदमी बेराम पड गए है उनको आराम होय तो कुरुक्षेत्रको चले जांयगे पूछा उनके संगमे और किसू तरफका आदमी है कहो और कोई तरफका आदमी उनके संगमे नही है येह सारा अहेवाल इजहारके तौरसे बेल साइबने लिष लिया भांईने अर्ज किया हजूर जो येह बातें पूछते है इस्का सबब क्या है हजूर तो मजिस्टेट है येह वात पूछें तो तामस साहब पूछते किस वास्तेके वोह रजीडंट है साहबने फर्माया गवरनर बहादुरका हुकुम हमारे नाम आया है के तहेकीत करो दिल्ली मे —१— नेपालके तरफसे कौन आया है भाईने अर्ज किया कोई वात हजूरसे छिपा हुवा नही है किस वास्ते के जो आदमी उधरसे आता है हार्सन साहब बतादुरका पर्वाना लेकर्के आवते है मेरा भाई जो अर्जी चिठी नेपालको भेजता है सो अंगरेजी डाकमे जाताहै मेरे भाईके नाम जो चिठी नेपालसे आवते है सो साहब रजीडंटकी सही होकर्के आवता है बन्दा अपनी रौटीके वास्ते येह काम कर्ता है रोटी देनेवाले —१— नेपाल है रक्षा कर्नेवाले हजूर षाविन्द है अब मेरे वास्ते जैसा हुकुम होवे सो करूं साहबने फर्माया सुनो बाबा हमे कुछ काम नही है जिसमाफिक अपना अर्जी पर्चा भेजते हो बषूबी अपना काम करो हम तुमको मना नही कर्ता है फकत हमको येह वात पूछना था कोई आदमी ब्रह्मके मुल्कका भी यहां बैठा है नेपालके आदमीसे नेपालकी वातसे हमे कुछ काम नही है सो गरीपर्वर मेरे वास्ते इत्तिलाहके हजूरमे अर्ज कर्ता हूं बाद मुलाहेजा कर्ने अर्जीके बन्दा —१— से होवे सोमाफिक बन्दा बजालावे ज्यादा क्या बिन्ति करूं —१— सर्वज्ञ हैं बेदस्तूरका लिषा जान अजान कुसूर माफ होवे सं १८९५ श्रावण वदि ८ रोज १ ———

३ उप्रान्त गरीवपर्वर मेरे पहेले श्रावण वदी ८ रोजमे लिषा अर्जी बन्देकी —१— के मुलाहेजेमे गुजरी होगी एक महीने रोजसे बन्दा —१— से हुकुमका उम्मेदवार है किस वास्तेके येह ब्राह्मण नमकहलाल नौकर—१—का है बेहुकुम —१— के कोई वात कर्ने नहीं सकता हूं बिच इन दिनोके वात बेतौर होरहा है डाकमे अर्जी षत भेजनेसे मेरे मनको भय मालूम होता है हाल मुफस्सिल ये है के हरेकतरफसे सुना जाता है —१— गोर्षालीके और साहेवान अंगरेजके लडाई जरूर होगी इधर नेपालसे लडाईका षवर सुन्नेमे आवता है राजा बिर्माके तरफसे भी ऐसा ऐसा वात सुन्नेमे आवता है इधर इरानवालोंकी रूसवालोंको आमद लगरही है सपाटूकी षवरसे येह वात सुन्नेमे आया है गवरनर बहादुरके हुकुमबमूजिव नेपालके आदमियौंकी हरेक जिलेमे तालाश होरही है और गवरनर बहादुरने हुकुम दिया है कोई आदमी देसदिसावरको चिठी भेजो तो विना हमारे देषे मत जाने दो इसी सववसे जमादार मन्नूसिंह शिमलेसे कूच कर्के दिल्लीमे आए हैं और १ महीने रोजसे कप्तान इन्द्रवीरसिंहजीकी चिठी भी लुध्यानेसे नहीं आई आज दिन येह वात सुन्नेमे आया है के कप्तान मौसूफको लुध्यानेमे रोक रषा है कुछ कागज षत कप्तान साहबके पास थे सो पकड लिए है झूठ सत्यका वात ईश्वर जाने कप्तान मौसूफकी चिठी आवनेसे अहेवाल मालूम होगा जैपुरसे चिठी आवनेसे मालूम हुवा शिवशर्मा जोइसी येह वात लिषते है नेपाली गोर्षाली कर्के हमारी चिठीके उपर मत लिषना सो गरीवपर्वर मेरे देसदिसावरका हाल तो ऐसा ऐसा सुन्नेमे आवता है अर्जी चालान कर्तेमो कप्तान इन्द्रवीरसिंहजीकी चिठी मेरे नाम आई उस्से मालूम हुवा कप्तान मौसूफके नाम जवतलक —१— से हुकुम नहीं जानेका तबतलक उन लोगका लुध्यानेसे उठना नहीं होगा कप्तान मौसूफकी २।३ अर्जीयां मेरेमार्फत—१—के चरणौमे पहोंची होगी बाद मुलाहेजा कर्ने अर्जीयौंके

कप्तान मौसूफके नाम हुकुम सादिर हुवा होगा सो आजतलक मेरे पास नहीं पहोचा है बन्दा उम्मैदवार है कप्तान इन्द्रवीरसिंहजीके वास्ते जैसा हुकुम —१—से इनायत होवे सो उनके पास भेजादिया जावे और दिल्लीका वात भी ज्यादा लिषने नहीं सकता हूं एक दो वात तो मुषसे निकालहेका भी नही है परन्तु कुछ वात धनराज हवल्दार हजूरमे विन्ती करेंगे सो सरद जानके हजूरमे मंजूर होवे गरीवपर्वर मेरे बन्दा—१— का नौकर निमकहलाल है मेरा जीव और प्राण और धन और हुर्मत ये सब —१— के काममे जाता रहे इस्मे तो मेरा उद्धार है परंतु कोई दुशमन या जवरदस्त मेरी हुरमत लेना चाहे तो उस हालतमे मेरी रक्षाको हजूर समर्थ है सिवाह —१— के चरणोंके और कोई आश्रय भरोसा नहीं रषता है ... उम्मैदवार इस वातका हूं हजूर षाविन्दी नजरसे मेरे हालपर मुषातिव रहैं ज्यादा क्या विन्ती करूं —१— सर्वज्ञ है जान अजान कुसूर माफ होवे सं. १८९५ श्रावण सुदि १५ रोज १ शुभम् ———————————————

४ उप्रान्त लाहौरके अषवारका फर्द १ दिल्लीके अषवारका फर्द १ हजूरके चरणोमे हाजिर कर्ता हूं सो मुलाहेजेमे गुजरे ज्यादा हाल दुसरी अर्जीसे हजूरमे जाहेर होगा बन्दा —१— से निकनजरका और पर्वशंका उम्मैदवार है और जो कार षिजमत मेरे लायक —१— से हुकुम होवे सोमाफिक बन्दा बजालावे ज्यादा क्या विन्ती हजुर सर्वज्ञ है जान अजान कुसूर माफ होवे सं. १८९५ भा. व. ६ रोज ७ ———————————————

५ उप्रान्त श्रावण वदि १ रोजमे लिषी अर्जीसे पीछे ज्मा अर्जी ७ बन्देकी हजूरमे पहोंची होगी अहेवाल मुफ-स्सिल हजूरमे जाहेर हुवा होगा बन्दा रोज —१— से हुकुमका उम्मैदवार रहेता है किस वास्तेके इन दिनोमे इधर उधरका वात बेतौर सुन्नेमे आवता है अबसे डाकमे चिठी भेजना मुनासिव नही है चिठी जरूर कहीं पकडा जायगा चिठी षोला जायगा जिस रोज इधर उधरका चिठी मेरे नाम डाकमे आवता है उसी रोज पूछा जाता है चिठी तुम्हारे पास कहांसे आया है ज्यादा हाल दुसरी अर्जीसे और अषवारसे मुलाहेजेमे गुजरेगा फकत मेरे नामका चिठी साबिक दस्तूर डाकसे भेजना मुनासिव है देसदिसावरको चिठी भेजना होवे तो हरकारेके हस्ते अथवा कासदके मार्फत मेरे पास भेजना मुनासिब है बन्दा भी जहांका चिठी भेजनेका होगा तहां कासदके हस्ते भेजूंगा ओर बन्दा भी साबिक दस्तूर अर्जी तो डाकमे भेजेगा मगर विशेष मतलबका अर्जी चिठी कासद मार्फत —१— से भेजूंगा उम्मैदवार हूं कासदका मजूरी षर्च —१— से इनायत होवे बन्दा सिरिफ हजूरके चरणोंका भरोसा रषता है मेरी अर्जीका पहोंचनामा हजूरसे हमेशां मिलता रहे इन दिनोमे बात बेतौर होरहा है जैसा हुकुम मर्जी—१— से होवे उसी तौरसे बन्दा कारगुजारी करेगा जमादार भी अर्जी भेजने नही सकते है जैसा हुकुम होवे सोमाफिक वोह लोग भी बजालावे ओर जो कारखिजमत मेरे लायक हजूरसे हुकुम होवे सोमाफिक बन्दा बजालावे ज्यादा क्या विन्ती करूं हजूर सर्वज्ञ है जान अजान माफ होवे सं. १८९५ भाद्र वदि १४ रोज १ ———————

६ उप्रान्त इस अर्जीसे पहले श्रावण वदि ९ रोजमे लिखी अर्जी १ श्रावण वदी ३० रोजमे दिखी अर्जी १ श्रावण सुदी ९ रोजमे लिखी अर्जी १ आवण सुदी १५ रोजमे लिखी अर्जी १ श्रावण सुदी १५ रोजमे लिखी अर्जी १ भाद्र वदि ८ रोजमे लिखी १ जमा इस अर्जीसमेत ७ अर्जी बन्देने —१— के चरणोमे भेजी है बाद अलाहेजा कर्ने अर्जीयोंके जमानेका हाल मुफस्सिल और बन्देका हाल हजूरके मुलाहेजेमे गुजरा होगा —१— के चरणोसे बन्दा रोजवरोज हुकुमका उम्मैदवार रहेता है किस वास्तेके इन दिनोमे इधर उधरका षबर बेतौर सुन्नेमे आवहा है षबरके नभेजनेसे बन्दा —१— का कसूवार है डाकके मार्फत अर्जी भेजनेसे मूजीव कवाहतका है किस वास्तेके जो अर्जी देसदिसावरकी चिठीसमेत —१— के चरणोमे गुजरी सो तो मेरे हक्कमे आनन्दको देनेवाली हुई जो अर्जी बिचमे रहेगी उसीसे मूजिब कवाहतका है मालूम होता है इन दिनोमे नेपालसे आया चिठी जरूर कहीं खोला जायगा जिस रोज इधर उधरका चिठी डाकमे मेरे नाम आता है उसी रोज पूछा जाता है चिठी कहासे तुम्हारे नाम आया है चिठीको हमे दिष-लादो नहीं तुम्हारे हक्कमे अच्छा नहीं होगा सो गरीब-पर्वर मेरे इन वातोमे कमाल मुश्किल होरहा है इस्का

हाल कुछ विन्ती कर्ने नही सकता हूं इस्के सिवाय जो १।२ वात है उन वातोको लिषने भी नही सकता हूं मुषसे कहेने भी नही सकता हूं इन वातोका मजमून कप्तान इन्द्रीवीरसिहजी हजूरमे विन्ती करेंगे सो सदर जानकर्के हजूरमे मंजूर होवे इसी वास्ते —१— के चरणोमे प्रार्थना कर्ता हूं अबसे डाकमे चिठीका भेजना मुनासिब नही है फकत मेरे नामका चिठी तो डाकमे भेजावे और देसदिसावर भेजनेका चिठी हरकारेका मार्फत अथवा कासदके मार्फत मेरे पास भेजाजावे इसी तौरसे बन्दा भी देसदिसावरको भेजेगा अबसे बन्दा भी साबिक दस्तूर षबर अर्जी तो डाकके मार्फत भेजेगा मगर विशेष मतलवका अर्जी चिठी कासदेके हस्ते —१— मे भेजुंगा उम्मैदवार हूं कासदेके षर्च मजूरी —१— से इनायत होवे गरीबपर्वर मेरे येह ब्राह्मण ७ वर्षसे नमकहलाल नौकर —१— का है और येह वातें अर्ज कर्नेके लायक नहीं थी परंतु बन्देने लाचार होकर्के षाबिन्दोके नमकको जानकर्के येह वातें अर्ज करी है इन वातोंके जाहेर होनेमे ब-देके हक्कमे अच्छा नही है आगे हजूर षाबिन्द और मालिक है अब —१— के चरणोसे बन्दा उम्मैदवार है बेहुकुम —१— के बन्दा हजूरमे हाजिर नही होने सकता है —१— का हुकुम होवे तो बन्दा —१— के चरणोमे हाजिर होकर्के १।१ वात विन्ती करेगा अपनी नमकहलालीका अहेवाल हजूरमे गुजारिस करे और अपना हक्क हजूरमे साबित करे ज्यादा क्या विन्ती करूं —१— सर्वज्ञ है जान अजान कुसूर माफ होवे सं १८९५ भाद्रपद वदि १४ रो——

७ उप्रान्त भाद्र वदि १४ रोजमे लिषी अर्जी बन्देके —१— मे पहोची होगी बाद पहोचने अर्जीके हाल बन्देका और तफसील अर्जियोंकी और जमानेका अहेवाल हजूरके मुलाहेजेमे गुजरा होगा अब बादेकी अर्ज ये है और षतका मौका येही है —१— से जो हुकुम पर्वाना चिठी षत मेरे नाम इनायत होवे सो हलकारेके हस्ते मेरे पास भेजाजावे डाकमे चिठीका भेजना मुनासिब नही है किस वास्तेके बन्दा दुसरेके मुल्कमे रैयत होकर्के बैठा है दस्तूर बेदस्तूर दोनो तरहसे हाकमका हुकुम मानना पडता है जिस रोज चिठी डाकमे आवेगा उसी रोज चिठी बेल साहब बहादुरको दिषलाना पडेगा चिठी विनादिषाए भी नहीं बनता है दिषलानेमे भी बडा बडा मुशकिल है इधर तो दस्तूर बेदस्तूर कोई कुसूर रषके मेरा हुरमत लियाजायगा और कोई वात बेतौर होनेसे अथवा चिठीके दिषलानेसे —१— के नजदीक बन्देकी नमकहरामी साबत होवेगी इस्मे बन्दा बर्बाद होजायगा यहां जिस तौर कमाल होरहा है ज्यादा हाल कुछ विन्ती नही कर सकता हूं इस वातका मतलब जमादार मन्नूसिहने हजूरमे विन्ती किया होगा इसी वास्ते बन्देने पहलेसे —१— मे इतिलाह करी है आगे हजूर मालिक और षाबिन्द है लाहौरके अषवारका फर्द १ दिल्लीके अषवारका फर्द —१— के चरणोमे हाजर कर्ता हूं सो मुलाहेजेमे गुजरे बन्दा —१— के चरणोसे नेकनजरका और पर्वर्शका उम्मैदवार है और जो कार षिजमत मेरे लायक —१— से हुकुम होवे सोमाफिक बन्दा बजालावे ज्यादा क्या विन्ती करूं —१— सर्वज्ञ है जान अजान कुसूर माफ होवे भाद्र सुदी ६ रोज २ शुभम्— — — —

८ उप्रान्त दिल्लीके अषवारका फर्द १ मे लाहौरके अषवारके —१— के चरणोमे हाजर कर्ता हूं सो मुलाहेजेमे गुजरे गरीबपर्वर मेरे भाईको दो चार दिनतलक रोज रोज बुलाया साहबने मेरे भाईसे कहा नेपालसे जो चिठी तुम्हारे नाम आया है सो हमे दिषला दो भाई मेरेने चिठी दिषलानेसे मेरे कहेबमूजिव बहोतसा इन्कार किया साहबने कहा अगर येह वात नकरोगे तो जमीन षोदकर तुमको और तुम्हारे भाईको जमीनमे गाडदूंगा और नेपालकी —१— मे तुम्हारा रोटी नही रषनेका तुम तो हमारा वात नेपालको लिषेगा मगर मै तुम्हारा वात —१— मे ऐसा ऐसा लिषूंगा के तुम्हारा नाश मिल जायगा तुम्हारे लिषनेसे कुछ नही होगा मेरे लिषनेसे तुम बिगडजावोगे भाईने अर्ज किया हजूर हाकम है हमारा घर लूटलें और हमारा शिर काटडालें मगर नेपालका चिठी किस तौरसे दिषलाऊंगा येह वात हमसे कभी नही होगा मेरे भाईने बहोत तरहसे चिठी दिषलानेमे इनकार किया. साहबने एक वात भी नही माना आषर लाचार होकर्के जो दसषत —२— के मेरे नाम आए थे तुमसे कोई पूछे तो सच्चा सच्चा वात कहे नाकर्के आज्ञा हुआ था सो चिठी साहबके पास लेगए साहबके हुकुम बमूजिव उस्का मजमून पढकर साहबको सुनाया साहबने कहा तुम्हारे

पढनेका हमको प्रतीत नही है हम और किसू साहबलोगसे पढवायेंगे सो चिठी साहबने लेकर्के रषलिया है वास्ते इत्तिलाहके अर्ज रषता हूं बन्दा —१— के चरणोसे क्रिपाकी दृष्टिका और पर्वर्शका उम्मैदवार है जो कारषिजमत मेरे लायक —१— से हुकुम होवे सोमाफिक बन्दा बजालावे ज्यादा क्या विन्ती करूं —१— सर्वज्ञ है जान अजान कुसूर माफ होवे सम्बत् १८९५ आश्विन वदि ७ रोज ३ शुभम् — — — —

९ उप्रान्त जमादार मन्नूसिंहके मार्फत भेजी अर्जी आश्विन वदि ३० रोज ३ शुभम् — — — — —

१० उप्रान्त दिल्लीके अषवारका फर्द १ मैं लाहौरके अषवारके —१— के चरणोमे हाजर कर्ता हूं सो मजकूरमे गुजरे गरीबपर्वर मेरे जो दसषत —२— जीके पहले मेरे नाम आए थे सो चिठी बेल साहब बहादुरने कई वार देषनेको मगवाई थी लाचार होकर्के वोह चिठी साहबको दिषलाई थी इस्का वात पहेले भी बन्दा—१— मे विन्ती करचुका है सो चिठी मेरे भाईने कई वार साहबसे मागा परंतु आजतलक साहबने चिठी नही दिया मालूम होता है वोही चिठी बेल साहब बहादुरने सिमलेको भेजी है वास्ते इत्तिलाहके अर्ज कर्ता हूं ज्यादा अहेवाल दुसरी अर्जीसे और अषवारसे —१—के मुलाहेजेमे गुजरेगा गरीबपर्वर मेरे बन्देकी अर्जीयोंका पहोंचनामा —१— के दफ्तरसे नही मिलता है इस्मे बंदेको बडा मुशकिल है उम्मैदवार हूं के मेरी अर्जियोंका पहौंचनामा मितीवार —१— मे इनायत हुवाकरे तो इस्मे मेरे हक्कमे बेहेतर होगा आगे हजूर मालिक और षाविन्द है जान अजान कुसूर माफ होवे सं १८९५ आश्विन सुदी ३ रोज ६ शुभम् — — —

११ उप्रान्त आश्विन वदि ७ रोज २ मे अर्जी रवाना करी उस्की नकल कागजोमे गिरिफ्तार होकर गई है — —

१२ उप्रान्त आश्विन वदि ७ रोजमे लिषी अर्जी बन्देकी —२— के हजूरमे पहोची होगी अहेवाल मुलाहेजेमे गुजरा होगा जिस दिनसे इधर उधरका गडबड सुन्नेमे आवता है उस रोजसे मैने अर्जियां बहोतसी अंधा होकर्के डाकमे फेंकदी है और अब भी हजूरके मर्जीबमूजिब डाकमे अर्जी भेजे जाता हूं मुझे मालूम नही है मेरी अर्जियां —१— मे पहोंचती है या किधर जाती है उम्मैदवार हूं कुसूर मेरा माफ होवे मेरी अर्जीका मितीवार पहोंचनामा हजूरसे इनायत हुवाकरे इस्से इधरउधरकी चिठी अर्जीका सुबिस्ता रहेगा और मेरे हक्कमे बेहेतर होगा गरीबपर्वर मेरे ७ वर्षमे हजारों मुशकिलोंसे बन्दा हजूरके चरणोतलक पहोंचा है ऐसा नहोवे येह वःत मेरा षराब होजावे इस वातमे संभार कर्नेवाले मेरा उजार कर्नेवाले हजूर मालिक और षाविन्द है इन दिनोमे बात बेतौर होरहा है जमादार मन्नूसिंहजी विस्तारपूर्वक हजूरमे जाहेर करेंगे आश्विन वदि ३० रोज ३ मे जमादार मस्कूर मेजर रधुवीर दिल्लीसे कूंच कर्के तीर्थयात्रा कर्नेके वास्ते काशीको रवाना हुवे है २०० रुपै वास्ते षर्चके उनलोगको साहूकारसे दिलवादिये है वास्ते इत्तिलाहके अर्ज कर्ता हूं यहां इन दिनोमे नेपाली आदमीका यहां बहोत तरहसे तालाश तहेकीकात है साहबलोग नेपालके चिठी षतोंका गुप्त तालाश कर्ते है। लक्ष्मण पण्डितजीकी जुवानी मालूम हुवा कुरुक्षेत्र जातेमो कोई फरेबसे अंगरेजके आदमियोंने कागज पुस्तक मात्र रस्तेमे षोस लिए और जिनिस कुछ नही लिया जमादार मेजर मस्कूरके चलतेमो भी कागजपत्रका तालाशी लियागया १०।१२ मंजिल पहोचनेतलक दिषा चाहिये कैसा होता है जमादार रोमान अधिकारीके नामका षत जो हजूरने मेरे पास भेजा था सो षत सपाट्से उलटा फिर आया है मालूम नही वोह लोग कहां बैठे है षत मैंने अपने पास रषा है जो मर्जी होवे सोमाफिक करूं ज्यादा सं १८९५ आश्विन सुदी ३ रोज ६ शुभम् — —

१३ उप्रान्त गरीबपर्वर मेरे श्रावण वदि ८ से लेकर अर्जियां बन्देने —१— के चरणोंमे गुजरानी है मेरी अर्जियोंका उत्तरा —१— से नही मरहेमत होता है इस्मे बन्देको बडा मुशकिल होरहा है अगर बन्देसे कोई जान अजान कुसूर बना है तो मेरा कुसूर माफ होवे अगर और कोई सवव है तो उस्की इत्तिलाह मुझे बक्सिये बन्दा हरहालमे कुसूवार औ तावेदार —१—का है जहांतलक मेरा जीव रहेगा तहांतलक —१— के हुकुमको बजाऊंगा इन दिनोमे जिस तौरका बात होरहा है सो हजूरमे रौशन है ज्यादा हाल अषवारसे हजूरके मुलाहेजेमे गुजरेगा इन दिनोमे डाकमे अर्जी चिठीका

भेजना महामुशकिल होरहा है जिस तौरसे हुकुम होवे उस तौरसे कारगुजारी करूं मेरी अर्जी –१– मे नही पहोंचती –१– का हुकुम मर्जी मेरे पास नही पहोंचता है इस वास्ते अर्ज कर्ता हूं बाद मुलाहेजा कर्ने अषवारके बन्दा उम्मैदवार इस बातका है के मेरी अर्जियोंका उत्तरा –१– से इनायत हुवा करें इस्के सिवाय अगर हजूर मुनासिब जाने तो इन दिनोमे चार हरकारे मेरे तईनाथ होवें तो काम –१– का बषूबी इजराह रहेगा अर्जी चिठीका इधर उधर जानेमे संभार रहेगा सिवाय इस्के और कोई ततवीर नही है आगे हजूर मालिक और षाविन्द है बन्दा –१– के चरणोंसे नेकनजरका और पर्वर्शका उम्मैदवार है दिल्लीके अषवारका फर्द १ लाहौरके अषवारका फर्द २—१– के चरणोंमे हाजर कर्ता हूं सो मुलाहेजेमे गुजरें ज्यादा क्या विन्ती करूं –१– सर्वज्ञ है जान अजान कुसूर माफ होवे सं १८९५ कार्तिक वदि ३ रोज ७ शुभम् – –

१४ उप्रान्त गरीबपर्वर मेरे दो महीनेसे मेरी अर्जीका जुवाव उत्तरा –१– से नही मिलता है इसी सवबसे सारा काम बन्द होरहा है और मैं भी लाचार होरहा हूं क्रिपा कर्के मेरी अर्जियोंकी पहोंचनामा –१– से इनायत होता रहे तो बेहत्तर है मेरी अर्जी क्रिपा कर्के –१– मे गुजरान दीजियेगा हजूरसे १२ अर्जियोंका पहोंचनामा नही मिला है मुझे इस वातसे बडा अंदेश होरहा है इन दिनोमे –१– मे गुजारिश कर्के ४ हलकारे मेरे तईनाथ होवे तो मुनासिब है इसी तौरसे चिठीपत्रका गुजारा होगा जिधरको –१– का मानिस जाता है उधरको चार आदमी अंगरेजके उस्के साथ लगते है हरतौरसे चिठीपत्रका तालाशी लेलेते है इन वातोसे चिठी डाकमे भेजनेमे बडा मुशकिल मालूम होता है जैसा हुकुम होवे सोमाफिक करूं आगे हजूर मालिक और षाविंद है ज्यादा हाल अषवारसे जाहेर होगा इन दिनोमें बन्दा भी दो समुद्रके बीचमे बैठा है मेरी रक्षा कर्नेको हजूर समर्थ हैं सिवाय –१– के चरणोंके और कोई भरोसा नही रषता हूं ज्यादा क्या विन्ती करूं हजूर सर्वज्ञ है जान अजान कुसूर माफ होवे सं १८९५ कार्तिक वदी ३ रोज ७ शुभम् – –

१५ उप्रान्त कार्तिक वदी ३ रोज ७ मे लिषी अर्जी बन्देकी शालिग्रामसिंह पटनेके मुषत्यारके मार्फत हजूरमे गुजरी होगी अहेवाल अषवारका और हाल बन्देका हजूरके मुलाहेजेमे गुजरा होगा बंदेकी अर्ज ये है के भाद्रपद सुदी ३ रोज ५ लिषे दसषत –२– के हजूरसे इनायत हुवे थे सो तो बन्देके पास पहुचे थे इस्से पीछे और कोई हुकुम –१– का और दसषत –२– के मेरे नामसे आजतलक नही इनायत हुवे दो महीनेसे मेरी अर्जीका पहोंचनामा भी हजूरसे नही इनायत हुवी इसी सवबसे बंबेको कमाल मुशकिल होरहा है उम्मैदवार हूं के हजूरसे इस अर्जीका पहोचनामा मुझे इनायत होवे जो बन्देकी हरसूरतसे दिलजमै होवे दिल्लीके अषवारका फर्द १ लाहौरके अषवारका फर्द १ हजूरके चरणोमे हाजर कर्ता हूं सो मुलाहेजेमे गुजरे बन्दा –१– के चरणोसे नेकनजरका और पर्वर्शका उम्मैदवार है और जो कारषिजमत बन्देके लायक –१– से हुकुम होवे सोमाफिक बन्दा वजालावे ज्यादा क्या विन्ती करूं –१– सर्वज्ञ है जान अजान कुसूर माफ होवे सं १८९५ कार्तिक वदी ११ रोज १ — — — — —

१६ उप्रान्त कार्तिक वदी ५ रोजमे लिषी अर्जी बन्देकी शालिग्रामसिंह मुषत्यारके मार्फत हजूरमे पहोंची होगी बन्देका हाल हजूरके मुलाहेजेमे गुजरा होगा गरीबपर्वर मेरे बन्देकी अर्ज ये है भाद्र सुदी रोज ५ मे लिषे दसषत हजूरसे इनायत हुवे थे सो तो मेरे पास पहोचे थे इस्के पीछे और कोई हुकुम दसषत मेरे नाम नही इनायत हुवे अर्से २ महीनेकेसे मेरी अर्जीका पहोंचनामा भी हजूरसे नही मिला है इसी सवबसे बन्दा कमाल अंदेशेमे होरहा है उम्मैदवार हूं मेरी अर्जीका पहोंचनामा हजूरसे इनायत होवे जो बंदेकी हरतौरसे दिलजमै होवे सिवाय हजूरके चरणोके बन्दा और कोई आश्रय भरोसा नही रषता है इन दिनोमे इधरउधरका गडवड सुन्नेमे आवता है कोई कहेता है नेपालसे लडाई होने लगा कोई कहेता है –१– ने अपने मुल्कमेसे रजीडंटको उठादिया है कोई कहेता है नेपालके रजीडंट छिप कर्के उठगए है इस इस तौरके बात सुन्नेमे आवते है हजूरसे अर्जियोंका पहोंचनामा भी नही इनायत होता है मालूम नही कौनसी अर्जी हजूरमे पहोंचकर मुलाहेजेमे गुजरे है कौनसी अर्जी बिचमे रहेती है दिल्लीमे अन्न महेगा होरहा है गेहूं १० सेर चने १० सेर चावल १२ सेर उडद १३ सेर मूग ८ सेर इस

भाव अन्न विकता है हुजूरके चरणोका बसीला छोड-कर और किसके अपना हाल विन्ती करूं षाविंदीकी नजरसे क्रिपा कर्के मेरी अर्जी –१– मे गुजरान दीजि-येगा और हुजूरमे गुजारिश कर्के कुछ षर्च मेरे वास्ते इनायत होवे ज्यादा क्या बिन्ती करूं हुजूर सर्वज्ञ है जान अजान कुसूर माफ होवे सं १८९५ कार्तिक वदी ११ रोज १ मे व्रजपाल दास साहू काशीवालेके मार्फत भेजी शुभम् — – – – – – –

१७ उप्रान्त गरीबपर्वर मेरे अर्सा २ महीनेका गुजरा है –१– से हुकुम दसषत मेरे हालपर नही बक्शागया है इस अर्सेमे बन्देने बहोतसी अर्जियां हुजूरके चरणोमे गुजरानी है उनका पहोंचनामा भी –१– के दफ्तरसे मुझे नही मिला है मालूम नही कौन सबब होगा अगर कोई कुसूर बन्देसे बना है तो मेरे कसूर –१– से बक्शेजावे और कोई सबब है तो मेरे हालपर क्रिपा कर्के उस्की इत्तिलाह मुझे बक्शिये कार्तिक वदी ३ रोजमे लिषी अर्जी बन्देकी शालिग्रामसिंह मुषत्यार-कारके मार्फत –१– मे पहोंची होगी दुसरी अर्जी कार्तिक वदी ११ रोजमे लिषी काशीमे भेजी सो जमा-दार मन्नूसिंह मेजर रघुपीरसिंहजीके मार्फत हुजूरमे गुजरी होगी इन दिनोमे नेपालतरफका गडबड बहोत सुन्नेमे आवता है मेरी अर्जी हुजूरमे नही पहोंचती है इस वातसे बन्दा लाचार है मुझे जैसा हुकुम होवे जिस तौरसे हुकुम होवे उसी तौरसे –१– की खिजमत-गुजारी करूं बन्दा हरहालतमे कुसूरवार और तावेदार –१– का है जो हुकुम –१– से होवे सोप्राफिक बन्दा बजालावे ज्यादा क्या विन्ती करूं –१– सर्वज्ञ है जान अजान कुसूर माफ होवे सं १८९५ कार्तिक वदी १२ रोज २

१८ उप्रान्त श्रावण वदी ८ से लेकर्के आज दिनतलक १५।१६ अर्जियां –१– के चरणोमे भेजी है –१– से १ अर्जीका उत्तरा भी नही इनायत हुवा है दो महीनेमे इधरउधरकी चिठियां बिचमे साहेवान पकडलेते है सुन्नेमै आता है १८ चिठियां बेल साहवके पास रषी है मालूम नही उसमे किस किसके नामकी चिठी है मेरी अर्जी –१– मे नही पहोचती है –१– का हुकुम मर्जी मेरे पास नही पहोंचता है इस वातसे बन्दा लाचार होरहा था इस अर्सेमे लक्ष्मण पण्डितजीने दिल्लीसे नेपालको जानेकी तयारी करी थी बेल साहव बहादुर जो दिल्लीके जज्ज है सो इस तालाशमे लगरहे थे इस्मे साहबको षवर पहोंची साहबने लाहौरी दर्वाजेके थानेदारके नाम पर्वाना इस मजमूनका भेजा और कोतवालके नाम हुकुम भेजाके लक्ष्मण पण्डित जो नेपालका रहनेवाला तुम्हारे इलाकेमे उत्तराहै उसे रातमे नजरबन्द रषो बिहान समे हमारे पास हाजर करो माफिक हुकुमके सदाशंकर थानेदार उनको अपने साथ साहबके पास लेगए बेल साहबने लक्ष्मण पण्डितसे सारा बात पूछा पण्डित मस्कूरने इजहारमे कुछ बात वेतौर कहा पहेले कहा नेपालकी –१– मे मुझे कुछ वास्ता नही है फेर कहा बालाशंकरके मार्फत अर्जी नेपालको भेजता हूं फेर कहा १।२ चिठी ज्वालाना-थके मार्फत भेजा है साहबने कहा कोई चिठी नेपालसे तुम्हारे पास आवता है पंडितने कहा हां चिठी गुरुजीका मेरे नाम आया था साहबने गंगाजली हाथमे रषके पूछा पंडित मस्कूरके हाथसे गंगाजली गिरपडा पंडित मस्कूरको मूर्छा हुवा पृथ्वीमे गिरपडे साहबने –१–का लालमोहोर अपने संदूकसे निकाला पंडितजीको कहा देषो तो येह चिठी किसके नामका है और चिठी दिष-लाया कहा देषो तो येह किस्के नामका है पंडितजीने कहा हां येह चिठी तो मेरे नामका है दुसरा चिठी जमादार मन्नूसिंहके नामका है इस्मे जवाव सवाल बेतौर पडगया वाद इस्के बेल साहबने हुकुम दिया ज्वालानाथके घरका तालाशी कर्के जितना कागज षत चिठियां है सव उठालाओ माफिक हुकुमके सदाशंकर थानेदार और बेल साहबके जमादार और सिपाही जाकर्के ज्वालानाथके घरका तालाशी कर्के सारा कागज उठालाए साहबने ज्वालानाथका इजहार लिया चिठियां देषी जो जो चिठी षत उनके कामका था सो साहबने सिमलेको भेजदिया साहवने कुछ कागज ज्वालानाथके पास लाहौरकी सनदें थी सो मागी थी उनके देनेमे तकरार किया था साहबने पंडित मस्कूरको और ज्वालानाथको कैदमे रषनेका हुकुम दिया सदाशंकर थानेदारने अर्ज किया खूदावंद लक्ष्मण पंडित जो है ब्राह्मण है इनको हुजूरने कैदका हुकुम दिया येह जव-तलक कैदमे रहेंगे तवतलक अन्नजल नही भोजन करनेके कुछ समझके साहबने हुकुम दिया इनलोगको इनके

डेरेपर लेजाकर नजरबंद रषो ज्वालानाथने अर्ज किया हजूरने मेरा घर तो देषा मगर बालाशंकरसे हजूर पूछे जितनी वात नेपालकी है वोह सव जानता है ढाई सौ षत चिठी नेपालसे आयाहुवा बालाशंकरके घरमे मौजूद है मै तो छै महीनेसे नौकर हूं बालाशंकर सात वर्षसे गोर्षाली –१– का नौकर है उस्को बुलाकर हजूर पूछे उसी समे साहवने हुकुम दिया एक प्यादेदार एक जमादार जाकर्के बालाशंकरको पकडलाओ उस्का षत चिठी सारा उठालाओ माफिक हुकुमके एक थानेदार २ जमादार ७ सिपाही मेरे घरपर आए मेरे घरका षानेतलाशी कर्के जितना कागज षत चिठियों थी सब उठाकर लेगए और मुझे भी पकडकर साहबके पास लेगए साहबने पूछा तुम कुछ नेपालसे वास्ता रषते हो मैने अर्ज किया बन्दा नेपालकी —१— का नौकर है तुम किस किस कामके नौकर हो मैने अर्ज किया जो जो फरफर्माइशका –१– से हुकुम आता है उस्का सरंजाम कर्के भेजता हूं और दिल्लीके अषवार लिखकर्के भेजता हूं साहबने पूछा तुमसे कौन कौनसे राजेबाबूसे लिषत पढत है मैने अर्ज किया सिबाय नेपालकी –१– के और किसू राजासे मेरी निविश्तष्वांद नही है साहबने पूछा तुम्हारी मार्फत –१– के तरफसे किसू राजासे जबाबसबाल होता है मैने कहा मेरी मार्फत किसू राजासे जबाबसबाल नही होता है बन्दा इस कामका नौकर नही है आजतलक किसूसे जबाबसबाल कर्नेको हुकुम भी –१– से मेरे नाम नही आया है साहबने पूछा ग्वालीयरकी सर्कारसे जोधपुरसे लाहौरसे तुम कुछ वास्ता रषते हो मैने अर्ज किया मुझे तीनो सर्कारोसे कुछ वास्ता नही है साहबने कहा कोई तुम्हारा षत पकडाजायगा तो तुम्हारे हक्कमे बुरा होगा मैने अर्ज किया ग्यालियरके मुकद्दमेमे अथवा जोधपुरके मुकद्दमेमे कोई चिठी या षत मेरा पकडाजावे या किसू तौरसे येह वात हजूरको साबित होवे तो मै सर्कारका गुनागार हूं साहबने पूछा येह वात सत्य बयान करो नेपालके महाराजका मतलब क्या है मैने अर्ज किया मै नही जानता हूं —१— का क्या मतलब है साहबने पूछा बडा ताज्जुबका वात है सात वर्षसे तुम गोर्षाली —१— का नौकर है और तुमको —१— का मतलब नही मालूम है मैने अर्ज किया हजूर जानते है के जो आदमी चार रुपै दर्माहा षानेवाला अदना छोटा चाकर होता है उस्से षाबिन्द कब कहेते है के मेरा येह मतलब है सो बन्दा तो नेपाल —१— का एक अदना चाकर भिक्षा मागनेवाला है कुछ बन्दा नेपालको —१— का अहेलकार नही है–१– के भारदारोमे नही है —१— के मुसाहेवोमे नही है मुझे किस तौरसे मालूम होवे के —१— का येह मतलब है इस वास्ते —१— के मतलबको मै नही जानता हूं वाद इस्के साहबने हुकुम दिया एक सिपाही बालाशंकरके घरपर रहे एक सिपाही ज्वालानाथके साथ रहे चार सिपाही लक्ष्मण पंडितके तईनाथ होवे इनलोगोको नजरबंद रषो येह लोक आपुसमे बात भी कर्ने नही पावें सी गरीबपर्वर मेरे उधर तो मुझे मालूम नही है नेपालमे किस तौरका बात होरहा है परंतु येहां तो जो कुछ होना था सो होगया जितनी मेरे बुजुर्गोको हुर्मत थी और —१— की दीहुई हुर्मत थी सारी हुर्मत विगडगई सारे घरका कागज षत चिठियां बेलसाहबके हजूरमे पहोंची है देषाचाहिए जिस रोज मेरा कागज देषाजावेगा उस रोज कैसा होवेगा अभीतलक मुकद्दमा लगरहा है हमलोग नजरबंद है इस हालतमे हजूरके चरणोके आश्रय लगरहा है जिस तौरसे बने उस तौरसे —१— ईश्वररूप होकर्के सहस्र भुजा धारण कर्के मेरी रक्षा करें गरीबपर्वर मेरे इस अवस्थामे महामुश्किलमे तलवारके नीचे वैठ कर्के येह अर्जी लिषकर हजूरमे गुजरानी है —१— मुझे अपना नमकपर्वदा जानके अथवा ब्राह्मण जानकर्के जिस तौरसे बने हजूर मेरी रक्षा करें ज्यादा हाल अवसर पायकर्के पीछेसे विन्ती करूंगा ज्यादा क्या विन्ती करूं —१— सर्बज्ञ है जान अजान कुसूर माफ होवे सं १८९५ कार्तिक सुदी १४ रोज ४— — — — — — — —

१९ उप्रान्त ईश्वर मेरे बन्दा तीन महीनेसे हजूरके हुकुमको देषरहा है मेरी अर्जी हजूरमे नही पहोंचती है हजूरका हुकुम मर्जी मेरे पास नही पहोंचता है बन्दा इस्से लाचार है कार्तिक वदी ५ रोजमे लक्ष्मण पंडितजी औ बन्दा और ज्वालानाथ तीनो आदमी बेल साहब बहादुरके हुकुमसे कैदके तौरसे हमलोग नजरबंद बैठे है ज्यादा हाल दुसरी अर्जीसे जाहेर होगा हुकमी कासदके मार्फत अर्जी हजूरमे भेजा है क्रिपा कर्के मेरी अर्जी उसी समे —१— मे गुजरान दीजियेगा अर्जीका

जुबाब इसी मानिसके हस्ते भेजदीजियेगा इस आदमीसे पूछियेगे किस तौरसे रस्तेमे चिठीका गुजारा हुवा है अपने चरणोको क्रिपापूर्वक जिस तौरसे बने हमलोगका उद्धार कीजियेगा ज्वालानाथने पहेले तो मुझसे वचन किया था मै तुमसे दगा नही करनेका हूं परंतु अब मुझे मालूम हुवा मेरे हक्कमे ज्वालानाथने बडा विश्वासघात किया है चार षत ज्वालानाथके कागजोमे मौजूद है सो बेल साहबके पास रषे है मेरे कतल करनेमे कुछ बाकी नही रषा है मालूम नही—१—मे किस किस तौरसै मेरी वदी लिषी है इन वातोंके लिषनेका अवसर पाउगा तो हजूरमे अर्ज करूंगा ज्वालानाथ मेरा कातिल है —१— के चरणोसे और —२— के हजूरसे इस वातका इंसाफ चाहता हूं जर्नेल मातवरसिंहजीको मेरा बहोत बदा लिषा है उस्के जुबाबमे षत आया था सो षत पकडागया है अर्जुन थापाजीको मेरा वदी लिषा था सो षत पकडा हुवा बेल साहबके पास मौजूद है मेरा ओर उस्का इंसाफ नेपालके दर्वारमे और —१— के हजूरमे होवेगा ज्वब मै अपने इंसाफको पहोंचूगा ज्वालानाथ येह वात चाहता है नेपालके दर्वारसे बालाशंकरको जो टुकडा मिलता है सो मौकूफ होजावे ज्वादा क्या विन्ती करूं हजूर सर्वज्ञ है जान अजान कसूर माफ होवे सं ६८९५ कार्तिक सुदी १४ रोज ४ सुभम्— — — —

२० उप्रान्त गरीबपर्वर मेरे जितनी अर्जियां बन्देने हजूरके चरणोमे भेजी थी जमा १९ अर्जीकी नकल जो अहेवाल ४ महीनेमे गुजारा था मैने हजूरके चरणोमे भेजा है क्रिपा कर्के मेरे हालको हजूर मुलाहेजा करें बन्देने कोई वात ऐसी नही है जिस्के हजूरमे इत्तिलाह नही करी है चिठी अर्जी —१— मे नपहोचने कर्के मै लाचार होगया था बाद इतना अहेवाल गुजरनेके मार्ग वदी रोजमे दो षत ज्वालानाथके नाम नेपालसे आए थे किसूके तरफसे सो षत लेकर्के ज्वालानाथ साहबके पास गया अर्ज किका येह षत नेपालसे आए है हुकुम होय जैसा करूं साहबने अपने सामने षत पढवाये षत अपने पास रषलिए हुकुम दिया आगे भी इसी तौरसे कर्ना होगा साहबने ज्वालानाथके कागज सब फेर दिया सिपाही जो उनके पउर तईनाथ किया था सो उठादिया ज्यादा वात जो ठहेरा है सो लिषने नही सकता हूं पंडित लक्ष्मणजीको साहबने बुलाया जो लालमोहोर उनके नाममे आया साहबके पास रषाथा सो षोलकर उनसे पढवाया बेल साहबने हुकुम दिया तुम्हारे वास्ते —१— से हुकुम आया तुमको नेपाल जाना होगा पंडितजीने अर्ज किया भिमस्युराजीके रस्तेसे होकर्के जाउंगा साहबने हुकुम दिया तुमको कोएलके रस्तेसे जाना होगा मार्ग वदी २ रोजमे बेल साहबने एक चपडासी साथ कर्के कोयलके साहबके नाम चिठी लिष कर्के पंडित मस्कूरको कोयलको रवाना किया इसी तौरसे थाने व थाने जिले व जिले पंडित मस्कूर नेपालमे पहोंचेगे मेरे वास्ते आज दिनतलक बेल साहबने कुछ हुकुम नही दिया है इसी सबबसे लाचार होकर सारा काम बंद किए बैठा हूं बेल साहबका हुकुम होवे अथवा —१— से हुकुम मेरे नाम इमायत होवे जब काम करूं —१— का ताबेदारी बजाउं गरीबपर्वर मेरे जिस रोजसे —१— के चरणारविन्दका मैने आश्रय लिया है उसी रोजसे परमेश्वरको भी मै भूलगया हूं मैने तो —१— को परमेश्वर रूप कर्के माना है —१— परमेश्वर रूप होकर्के विश्वंभर रूप होकर्के मेरा उद्धार करें और मेरा पालन करें आठ महीनेसे —१— से कुछ षर्च मुझे नही इनायत हुवा है रुपैके विना किस तौरसे मेरा गुजारा होगा उम्मैदवार हूं कुछ षर्चके वास्ते —१— से हुकुम होवे —१— के चरणोसे उम्मैदवार हूं कुछ इज्जत मुझे बक्शिश होवे जो दिल्लीमे मेरा हुर्मत साबिक दस्तूर बनारहे अब मेरा हुर्मत बिगडगया है और हजूरका दर्वार इज्जतबक्श है ज्यादा क्या विन्ती करूं —१— सर्व है जान अजान कुसूर माफ होवे सं १८९५ मार्गसित सुदी ७ रोज २ मुकाम दिल्ली सुभम्— —

भिक्षुकस्य कोटि कोटि प्राणाभाः सन्तु
भिक्षुकस्य कोटि कोटि शुभाशिषः सन्तु

—०—

नं. ४१

अर्जि— — — — — — — — —
उप्रान्त देसतर्फको हाल हकिगत बुझन मानीस पठाइराष्याको छ जो षवर आउला पछि विति गरी पठाउला भनी अघिका अर्जिमा विति गरी पठायाको हो मंसीर महिना लषनौबाट

चकलेदार हाकिम दर्सनसिं वलिरामपुर आइ लडाइ गरि जिति ९ तोप लग्यो २ सय जवान काटिगया ३ सय जवान वेह्लिवाढि लग्या जगामा आफ्ना सिपाहि राषि रुषया तर्त-हसिल गरि लग्या राजा भागि अंग्रेजका मुलुकमा वस्याका छन् पौषमा फेरि उहि चकलेदार नानपारका राजा मनहरो षांसित लडाइं गर्न गैरहेछ ७ दीन ७ रात तोपका अवाज चल्याको सुनिथ्यो हारजीतको हाल तहकित आयाको छैन भंन्या षवर ल्याया अरू षवर पटनामा रहन्या सालिग्रामले मलाई लेष्याको चिठी विजिनिस चढाइ पठायाको छ विस्तार विजिनिसबाट जाहेर होला पौषका ११ दिन जांदा सुव्वा गोसाई शिववक्स पुरिलाइ नेपालतर्फको रवाना गरि हुकुम-वमोजिम गोसाञीलाइ लालमोहर र मोहरवमोजीम आल-माल दिलाइदिन्या काम गऱ्यां मलाइ हिसाप र निसाप भेटाइदेउ भनी गोसाञी भंछन् जुनापमा पुगी बिस्तार विंति

अ र ा ल ञाहाको षैषवर जथास्थितै छ अवप्रान्त पाया सुन्याको षवर प छि विंति गरि पठाउंला सदय हृदयानन्द प्रभू चरणेष्वलमति विस्तरेण— — — — —

इत सदा स्यवक सिंहवीर पांडेको मेदिनीमिलित कोटि कोटि साष्टांग कुर्णेज कुर्णेज कुर्णेज कुर्णेज कुर्णेज

इति सम्वत १८९८ साल मिति पौष वदि ११ रोज ६ मुकाम वुटवल शुभम्

नं. ४३८

श्री ५ सर्कार श्री ५ महाराज श्रीराजकुमारात्मज प्रभु साह
१ २ ३

अर्जि— — — — — — — — — —

उप्रान्त आश्विन शुदि १३ रोज ६ का मितिमा भयाका हुकुमको लालमोहर कार्तिक वदि ३ रोज ४ का मितिमा आइपुग्यो हरफ हरफ पढी शिर चह्राञा कुम्मेदान मित्रलाल पाध्याले डांकुका सर्दार मंगलसिं फत्यसिंसमेत डांकुहरू पक्री अंग्रेजका सपुर्द गरी रसिद लिन्या काम बढिया गऱ्याछन् डांकु प्रक्रन आउन्या साहेवले हाजसन साहेवलाइ लेष्याको अंगरेजि षत हाजसन साहेवका सपूर्द भयो तुलसिपूरका राजावाट आयाको फार्सि षत कपतान वालुसाहेवले तंलाइ लेष्याको रहेछ फार्सिको हिंदवीसमेत पठाइवक्स्याको छ कुम्भेदानले डांकुहरू प्रक्रदामा षर्च भयाका ४०० रुपैंया दीपठाउन्या काम गर मोजरा वक्सौंला ति डांकुहरूछेउ धनदौलत प्रसम्त छ भंन्या लेषी आयाको हो कतिसंम हात लाग्यो अंगरेजहरूले इनाम दिया भन्या सोसमेत लि सवैं जम्मा गरि विंति गरि पठाउनु कालिजङ पल्टन सल्यानमा छदैंछ सल्यान डुल्लु दैलेषमा साविकवमोजिम पल्टन कंपनि ञाहांवाट पुगंजीसंम सवुज पल्टनका सय नाल र सुवेदार-संमका १।२ पगरि राषी फेला पऱ्याका डांकुहरू पक्री अंगरेजका सपूर्त गरि रसीद लिनु भन्या कुरा अह्राई पल्टनली कुम्भेदान मित्रलाल पाध्याले पाल्पामा आउनु औ अघि डांकु पक्रम आउन्या साहेवले तंलाई लेष्याका फार्सि षत-माको कुरा हेरि उत्तर मिलाई डांकुहरूका जियलाई केहि नहवस् भन्या वढिया वेहोराको तेरो चिठि लेषी पठाउन्या काम गर्नू अवउप्रान्त ञाहां लडिकावाला छोडी गोरषपूर पल्टनमा जो भर्ति हुन जाउला सो पछि दुष पाउला भन्या उर्दि दिन्या काम गरिराष्नु लषनौका नवाफको चकलेदार संषर दयाल पाठकहरू स्युराजमा आयाको कुरा ति आप-सैमा षडवड परी नमिलि आयाका रह्याछन् कि अंगरेजसंग षडवड परि आयाका रह्याछन् पैल्हे जस्ताको तस्तो वुझि तल १।२ करोड र उपल्लो २०।२५ करोडसम्म रुपैया दिने सक्न्या रह्याअन् कि रहेनछन् अभ्यन्तरसंग पाका मानिस पठाई सवै कुरा जस्ताको तस्तो गरि पछि तफावत कति नपऱ्या गरि बुझि विंति गरि पठाउन्या काम गर भंन्या हुकुम आयाका अर्थ बहुत वढिया योग्य हुकुम लेषी आयेछ सेवकले षटाई अह्राइ पठायाको कुम्भेदानले गऱ्याका कामको विवेक...१...बाट गरिवक्सनुहुन्यैछ कपतान वालुसा-हेवले लेष्याका फार्सि षतको सिंदुवी उतारी पठाइवक्सनुभ-याको आइपुग्यो डांकु पक्रदामा षर्च भयाका ४०० रुपैंया हुकुमवमोजिम कुम्भेदानछेउ पठाइदिन्या काम गर्छु अंगरेजले इनाम दिया नदियाका कुराका अर्थ मंगलसिं सर्दार पक्री सपूर्त गर्न जान्या ज्मादार कांसिराम घर्ति आइपुग्या र विस्तार सोद्धा मंगलसिलाई षटौलाको सवारि गराई चौत-र्फि चारगजको हातसित सिपाहि राषि गयाका थिञौ पैल्हे उसलाई देषन्या हलकारा पठायो र हेरि हां मंगलसिं सर्दार है भनी गयो फेरि मुनसि आया हेरि गयो मुनसिसित संगै भै आफु आयो र मंगलसिं वादशाह सलाम भनि हात उठाइ सलाम गऱ्यो मंगलसिं पनि षटौलावाट उत्रि सलाम गऱ्यो किउं मंगलसिं बादशाह हमने तुमको षातिर षाके चिट्ठिपर चिठि कैदफे लिषा तुम किउं नआया आउते तो तुम बडा आदमि होता तुमको राज मिलता राजा होते नआये येस्ता फजियत पाया भनि मेघडवन साहेवले भन्यो र तुमारा

हमारा मुलाकात होनेका हमारा करममे इसि तरहसै लिषाथा हुवा अंगाडि राज मिलता तो अवभि नमिलेगा इससे क्या है जो हमारा किस्मतमे लिषा है सोइ होगा भनि मंगलसिले जवाप दियो रिसालाको ज्मादारले किउं मंगलसि जव हमारे हातमे कवुजा था वडे वडे राजे हमारे पयरमे गिर्तेथे जव ऐसे ऐसे गिदड भि मंगलसि जव कहने लगे भनि मंगलसिले भन्यो किउं तुमको कुछ षवर है मंगलसि वादसाहके दोचार पल्टन नवाफका फौज जगै जगेका राजाका फौज होकर्के ६ सवा कोसके धावा कर्के मंगलसि वादसाहको तिन वरस हुवा पकडने नहि सके गोर्षा...२... से दोस्ति होनेसे हमारे साहवने...२... के हजूरमे मैंगलसि वादसाहको पकडनेके वास्ते इतलाय किया नाजि वुटवलके काजीसाहेव रणदल पांडेको मंगलसि वादसाहको पकडो कहेके लालमोहर आया बडा तकिफसे काजिसाहवने पकडागया क्यावात है इस वातका वयान लाठसाहवसे बेलायेतमै जाहेर होगा वेलायेतसे लाठसाहवको हुकुम आयेगा...२...को तौफा चिज आयेगा काजीसाहेवको तोफा चिज पल्टनको इनाम नेपालमै रहनेवाला रजिडंट साहेवके पास आवेगा फेर...२... के हजुरमे साहेवलोगसे तोफा चिज गुर्ज्रगा..२.. से काजिसाहेवके पास आयेगा काजिसाहेवने पल्टनको इनाम वांटेाजायेगा वडा इनाम होगा भनि साहेवले भन्या इनाम त दियेनन् भनि ज्मादार कासिराम घर्तिले विस्तार गर्‍या मुन्सि आईपुग्यापछि जो भयाको निस्तुक षवर लेषि चह्राई पठाउंला सुवेदार येक र सय नाल सल्यानअड्डामा रहन्या साविकवमोजिमका लस्कर नआउंज्याल पठाईदिन्या काम गर भन्या हुकुम आयाका अर्थ अघि जो काजमा जान्या ७ पट्टि सवै विराम भइ विछाउनामा पर्‍याका छन् मर्दैछन् भन्या षवर आउंछ जो वांच्याका कर्तिज्याल आराम हुन्छन् नाम ज्यादा जगा देसदेसावरका मानिस आउंछन् भनि वुटवल जांदा लस्कर सामेल भै भारि लस्करसित जादुपर्न्या दस्तुर रहेछ वुटवल जान्या वेला पनि आयो साह्रै पातलो पर्ला भनि १ सुवेदार १ ज्मादार ६० जवान सिपाहि पठाउन्या काम गर्‍यां ७ पट्टि विरामि १ पट्टि सल्यान जान्या वांकि १४ पट्टि रहन्छन् येस्मा काज विरामि विदा गरि १ पल्टन जति वुटवल जान्या हुनन् डांकुहरूछेउको लुटपिटको हात लाग्याको कस कसछेउ क्या क्या छ कति कति छ ताहां रहन्यावाट सो षसोषास लेषाइलिनु आहावाट पठायाका सुवेदार जामादारसमेत पट्टि ताहां राषी हुकुमवमोजिम फैला पार्‍याका डांकुहरू पक्री अंगरेजका सपूर्त गरि रसिद लिनु भन्या कुरा अह्राई पल्टनका विरामीहरूको थान गरि हिडन सकन्या साथ लि आउनु भन्या कुरा कुम्भेदानलाई लेषि पठाजा उनहरू आइपुग्यापछि उनहरूले कहांकाको विस्तारसमेत डांकु पक्रदामा लुटपिट गरि जस जसले ज्या ज्या लियाको होला जनोजात तपसील षोली फर्द उतारी चह्राइ पठाउन्या काम गरुला जो हुकुम भै आवला सोवमोजिम गर्नान् मुन्सी आइपुग्यापछि ति डांकुहरूका जियलाइ केहि नहवस भन्या वढिया वेहोराको मेरो चिठि डांकु पक्रन आउन्या साहेवलाइ लेषि पठाउन्या काम गरुला आहा लडिकावाला छोडि गोरषपूर पल्टनमा भर्ति हुन जान्याले पछि दुष पाउला भन्या उदि अघि पनि सुनाइदियाको हो फेरि पनि सुनाउन पठाइदिजा लषनौवाट आउन्या संषरदयाल पाठकहरूको अघि षवर ल्याउन्या पछि...३... को कारोवारि डिट्टा मनिरत्न हो आहा दसैं मान्न आयाको थियो आजकाल अलिक विरामी छ निको हुन लाग्यो तसैसंग षवर्दार पाको मानिस षटाइ हुकुमवमोजिमको वेहोरा निस्तुक सोधि तनको षुवि मतलव काहांसंम रहेछ जस्ताको तस्तो ठहराइ तफावत कत्ति नपर्न्या गरी लेषी पठाउनु भन्या कुरा अह्राई पाठकहरूछेउ पठाउन्या काम गर्छु इनहरूले लेष्याको विस्तार हजूरमा विति गरि पठाउन्या काम गरुला विज्ञ प्रभु चरणकमलेषु किमधिकम् इति सम्वत १८९७ साल मिति कार्तिक वदि रोज मुकाम तान्सेन शुभम् — —

सदा सेवक रणदल पांडेकस्य कोटि कोटि कुर्नेस
साष्टांग दंडवत्सेवा सेवा सेवा सहस्रम् शुभम्— —

—०—

नं ९७

अर्जि– — — — — — — — — — —

उप्रान्त गवर्नर्जनरल पश्चिम गयादेखि याहां मामूलि दर्वार भयाको थिएन आश्विन शुक्ल ५ रोज ७ का दिन साहव सिक्रिटरिकाहां दर्वार भयो हजूरका मिजाज मुवारकको षैर आफियत सोध्या वहुत षुसि वाषुसि हुनुहुन्छ भनि जवाव दियां भाद्र शुक्ल १२ का दिन कावुलका किल्लामा अंरेजको अमल भयो भन्या षवर याहां अषवारमा छापियाको छ फारसि अषवार २ हजूर्मा चढाई पठायाका छन् नजर्फर्माई वक्स्यागया कावुलको हवाल जाहिर होला ईति सवत १८९९ साल मिति आश्विन शुवल १० रोज ६ मोकाम कल्कत्ता चितपूर शुभम् — — — — — — — — —

सेवक लोकरमणोपाध्यायको वेदोक्त शुभ आसिर्वाद
सहस्रम्– — — — — — — —